PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 6, ISSUE 2

'कर्मभूमि' उपन्यास में गाँधी-विचारधारा का प्रभाव

डॉ. भरत ए. पटेल

हिन्दी विभाग,

विजयनगर आर्ट्स कॉलेज, विजयनगर

गुजरात भारत

महात्मा गाँधी और मुंशी प्रेमचंद समकालीन थे | गाँधीजी का जन्म संवत १९२५ भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की द्वादशी को अर्थात २ अक्तूबर , १८६९ को पोरबंदर में हुआ था | हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार मुंशी प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई , १८८० को वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था | गाँधीजी ४ सितम्बर , १८८८ के दिन बेरिस्टर बनने के लिए दक्षिण आफ्रिका गए थे | वहाँ उन्हों ने हिंदी लोगों के अधिकारों के लिए संगठन बनाया था | सन् १९१५ में गाँधीजी भारत लौटे और उन्हों ने राष्ट्रीय , सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर देश की जनता को जागृत करने का प्रयास आरंभ कर दिया था | उनके द्वारा प्रेरित राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीय जनजीवन और साहित्य को काफी प्रभावित किया | प्रेमचंद शुरू में उर्दूभाषा में ' नवाबराय ' के नाम लिखते थे | सन् १९०७ में उनकी पाँच कहानियों का संग्रह 'सोजेवतन ' (वतन का दु:ख-दर्द) के नाम से छपा था | अंग्रेज़ शासकों को इसमें विद्रोह का स्वर सुनाई दिया | अत: पुस्तक जब्त कर ली गई और उसके लेखक नवाबराय की काफी खोज-ढूँढ हुई | अर्थात इनमें राष्ट्रीय भावना तो शुरू से ही थी | अंतत: उन्हों ने प्रेमचंद के नाम से हिन्दी में लिखना शुरू किया | सन् १९१६ में प्रेमचंद की प्रथम कहानी ' पंच परमेश्वर ' प्रकाशित हुई | गाँधी

विचारधारा से प्रभावित होने के कारण उनका कथा-साहित्य समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है | उन्हों ने सत्य , अहिंसा , स्वच्छता , सेवा , त्याग , श्रम की प्रतिष्ठा , बलिदान जैसे जीवन आदर्शों को पुन: स्थापित करने का भरसक प्रयत्न किया है |

प्रेमचंदजी ने गाँधीजी के विचारों और आदर्शों को अपने औपन्यासिक पात्रों के माध्यम से जीवंत कर दिखाया है | ' कर्मभूमि ' उपन्यास का नायक अमरकान्त गाँधी विचारधारा से प्रभावित और परिचालित दिखाई देता है | गाँधीजी ने चरखा चलाकर , सूत कातकर खादी बनाकर देशवासियों के स्वावलंबन और विदेशी कपड़ों के बहिष्कार की मुहिम चलाई थी | ' कर्मभूमि ' उपन्यास का नायक अमरकान्त नियमित रूप से हररोज दो घण्टा सूत कातता है - " स्कूल से लौटकर अमरकान्त नियमानुसार अपनी छोटी कोठरी में जाकर चरखे पर बैठ गया | उस विशाल भवन में , जहाँ बारात ठहर सकती थी , उसने अपने लिए यही छोटी-सी कोठरी पसंद की थी | इधर कई महीने से उसने दो घण्टे रोज सूत कातने की प्रतिज्ञा कर ली थी और पिता के विरोध करने पर भी उसे निभाये जाता था | " [१] यहाँ अमरकान्त के चरित्र में स्वावलंबन के साथ जीवन की सादगी के भी दर्शन होते हैं |

गाँधीजी ने श्रम की महत्ता पर विशेष ज़ोर दिया था | अमरकान्त को श्रम करने में किसी भी प्रकार की शर्म का अनुभव नहीं होता | नगर के सब से धनी सेठ समरकान्त का बेटा होने के बावजूद वह सूत कताई करता है , साथ ही उसने बड़ी-बड़ी कोठियों में पत्र-व्यवहार करने का काम शुरू कर दिया था | वैभवपूर्ण जीवन जीनेवाली सुखदा और लाला समरकान्त को यह बात अखरती है -

> " सुखदा ने कहा - ' तुम दस-दस पाँच-पाँच रुपये के लिए दूसरों की खुशामद करते फिरते हो ; तुम्हें शर्म भी नहीं आती ! '

अमर ने शांतिपूर्वक कहा - ' काम करके कुछ उपार्जन करना शर्म की बात नहीं | दूसरों का मुँह ताकना शर्म की बात है | '

' तो ये धनियों के जितने लड़के हैं , सभी बेशर्म हैं ? '

' हैं ही , इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं ... जब मालूम हो गया कि मैं अपने खर्च-भर को कमा सकता हूँ , तो किसी के सामने हाथ क्यों फैलाऊँ | " [२]

अमरकान्त म्युनिसिपील बोर्ड का मेम्बर चुना गया | वह राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में ज्यादा व्यस्त रहने लगा और पूरा दिन बाहर रहने लगा | पिता समरकान्त को यह बात खटकने लगी | उन्हों ने कहा , ' तुम बाल-बच्चेवाले हो | अब घर-दुकान संभालो और मुझे मुक्त करो | यह बहस झगड़े का रूप ले लेती है | समरकान्त क्रोध में आकर बोले - ' तो बाबा , तुम अपने बाल-बच्चे लेकर अलग हो जाओ , मैं तुम्हारा बोझ नहीं सँभाल सकता | ' इस बात पर अमर , सुखदा , बच्चा और नैना किराए का मकान लेकर अलग रहने चले गए | दूसरे ही दिन अमर कमाने के लिए बाजार जाता है - " अमरकान्त को बाजार के सभी लोग जानते थे | उसने एक खद्दर की दुकान से कमीशन पर बेचने के लिए कई थान खद्दर , खद्दर की साड़ियाँ , जम्फ़र , कुरते , चादरें आदि ले ली और उन्हें खुद अपनी पीठ पर लादकर बेचने चला |

दुकानदार ने कहा - ' यह क्या करते हो बाबूजी , एक मजूर ले लो | लोग क्या कहेंगे ? भद्दा लगता है | '

अमर के अंत:करण में क्रान्ति का तूफान उठ रहा था ... वह बोझ उठाकर दिखाना चाहता था , मैं मजूरी करके निबाह करना इससे कहीं अच्छा समझता हूँ कि हराम की कमाई खाऊँ | " [३] यहाँ अमर के चरित्र के माध्यम से श्रम की महत्ता को प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया गया है , साथ ही खादी के प्रचार-प्रसार को महत्व दिया गया है |

महात्मा गाँधी स्वच्छता के आग्रही थे | उन्हों ने दक्षिण अफ्रिका में हिन्दी बस्तियों में और तत्पश्चात भारत में भी स्वच्छता का अभियान चलाया था | ' कर्मभूमि ' उपन्यास का नायक अमरकान्त गाँव में सलोनी काकी की झोंपड़ी के आँगन में पहले ही दिन खुद झाड़ू लगाता है - " दोनों पहुँची तो देखा अमरकान्त द्वार पर झाड़ू लगा रहा है | महीनों से झाड़ू न लगी थी |

मालूम होता था , उलझे-बिखरे बालों पर कंघी कर दी गई है | सलोनी थाली लेकर जल्दी से भीतर चली गई | मुन्नी ने कहा - अगर ऐसी महेमानी करोगे , तो यहाँ से कभी न जा पाओगे | उसने अमर के पास जाकर उसके हाथ से झाड़ू छीन ली | अमर ने कूड़े को पैरों से एक जगह बटोरकर कहा - सफाई हो गई , तो द्वार कैसा अच्छा लगने लगा | " [४]

गाँधीजी ने सदियों के शोषित , पीड़ित , दलित और पिछड़ी जातियों को समाज में आदर और सम्मान मिले , इसलिए अछूतोद्धार का संकल्प किया | गाँधीजी के इस संकल्प का कई लोगों ने समर्थन किया | अमरकान्त भी शहर के बड़े घर का , वैष्णव का बेटा होने के बावजूद भी वह गाँव में चमारों की बस्ती में सलोनी काकी के घर ठहरता है | प्रथम मुलाक़ात में सलोनी काकी से जब पूछता है कि परदेशी को रातभर ठहरने का ठिकाना मिलेगा ? तब वह उसे सिर से पैर तक देखकर कहती है - यहाँ तो सब रैदास रहते हैं भैया | तब अमर ने नम्रता से कहा - " मैं जात-पाँत नहीं मानता , माताजी | जो सच्चा है , वह चमार भी हो , तो आदर के जोग है ; जो दगाबाज , झूठा , लम्पट हो , वह ब्राह्मण भी हो , तो आदर के जोग नहीं | " [५] यहाँ उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों को न छूने की रूढ़ परंपरा का खण्डन करते हुए छूआछूत की समस्या को दूर करने का प्रयास किया गया है |

निम्न जातियों का मन्दिर में प्रवेश निषिद्ध था | इस अन्यायपूर्ण धार्मिक अंधश्रद्धा का चित्रण प्रेमचंदजी ने प्रस्तुत उपन्यास में किया है - " सहसा पिछली सफ़ों में कुछ हलचल मची | ब्रह्मचारी कई आदमियों को हाथ पकड़-पकड़ कर उठा रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ दे रहे थे | हंगामा हो गया | लोग इधर-उधर से उठकर वहाँ जमा हो गए | कथा बंद हो गई |

समरकान्त ने पूछा - क्या बात है ब्रह्मचारीजी ?

ब्रह्मचारी ने ब्रहमतेज से लाल आँखें निकाल कर कहा - बात क्या है , यह लोग भगवान की कथा सुनने आते हैं कि अपना धर्म भ्रष्ट करने आते हैं ! भंगी , चमार जिसे देखो घुसा चला आता है - ठाकुर जी का मन्दिर न हुआ सराय हुई !

समरकान्त ने कड़ककर कहा - निकाल दो सभी को मारकर !

एक बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा -हम तो यहाँ दरवज्जे पर बैठे थे सेठ जी , यहाँ जूते रखे हैं | हम क्या ऐसे नादान हैं कि आप लोगों के बीच में जाकर बैठ जाते |

ब्रह्मचारी ने उसे एक जूता जमाते हुए कहा - तू यहाँ आया क्यों ? यहाँ से वहाँ तक एक दरी बिछी हुई है | सब का सब भरभंड हुआ कि नहीं ? परसाद है , चरणामृत है , गंगाजल है | सब मिट्टी हुआ कि नहीं ? अब जाड़े-पाले में लोगों को नहाना-धोना पड़ेगा कि नहीं ? हम कहते हैं तू बूढ़ा हो गया मिठुआ , मरने के दिन आ गए , पर तुझे अकल भी नहीं आयी | चला है वहाँ से बड़ा भगत की पूंछ बनकर ! " [६] इस अत्याचार का डॉ॰ शांतिकुमार ने व्यंग्यपूर्ण तरीके से खण्डन और विरोध किया है - " आप लोगों ने हाथ क्यों बंद कर लिए ? ... बंदूकें मंगाइए और धर्म-द्रोहियों का अन्त कर डालिए | सरकार कुछ नहीं कह सकती | और तुम धर्म-द्रोहियों , तुम सब के सब बैठ जाओ और जितने जूते खा सको खाओ | तुम्हें इतनी खबर नहीं कि यहाँ सेठ-महाजनों के भगवान रहते हैं ! तुम्हारी इतनी मजाल कि इन भगवान के मन्दिर में कदम रखो ! तुम्हारे भगवान कहीं किसी झोंपड़े में या पेड़ तले होंगे | यह भगवान रत्नों के आभूषण पहनते हैं , मोहन भोग-मलाई खाते हैं | चीथड़े पहनने वालों और चबेना खाने वालों की सूरत वह नहीं देखना चाहते हैं | " [७] शांतिकुमार मैदान में अलग से कथा सुनाते हैं | वहाँ हर जाति के लोग कथा सुनने जाते हैं | वे प्रजा को मन्दिर में प्रवेश करने के लिए उकसाते हैं | समरकान्त , ब्रह्मचारी वगैरह पुलिस बुलाकर लाठीचार्ज करवाते हैं और तत्पश्चात गोलियाँ चलवाते हैं | कई लोग मारे जाते हैं , सैंकड़ों घायल होते हैं | अमर की पत्नी सुखदा प्रजा के समर्थन में खड़ी हो जाती है | वह भागते हुए लोगों को इकट्ठा करने के कोशिश करती है | गोलियों की बौछार में अपनी बहू को खड़ी देखकर समरकान्त गोलियाँ बंद करवा देते हैं | वे सुखदा के समीप जाकर ऊँचे स्वर में कहते हैं - " मंदिर खुल गया है | जिसका जी चाहे दर्शन करने जा सकता है | किसी के लिए रोक-टोक नहीं है | " [८] यहाँ प्रेमचंदजी ने अछूतों का मंदिर प्रवेश करवाकर गाँधी

जी के अछूतोद्धार के संकल्प को दृढ़ किया है और समाज में यह संवाद प्रचारित करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है |

अमरकान्त गाँव के चमारों के बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल खोलना चाहता है | सलोनी काकी इस नेक काम के लिए अपना घर स्कूल के लिए दे देती है | यहाँ लेखक ने गाँव के दलित जाति के बच्चों को शिक्षा का अधिकार दिलाने का प्रयत्न किया है | साथ ही अमर ने गाँववालों को शराब और मुर्दा मांस खाना भी छुड़ा दिया |

गाँधीजी के एकादश व्रत में असंग्रह भी एक है , जिसका अर्थ होता है अपरिग्रह अर्थात् धन का संग्रह न करना , धन का दान करना , त्याग की भावना होना | इस उपन्यास में रेणुका देवी अपनी सारी संपत्ति सेवाश्रम के लिए दान कर देती है | कृपण और धनलोभी नगरसेठ लाला समरकान्त , सरकारी नौकर सलीम , बूढ़ी पठानिन आदि का हृदय -परिवर्तन कराकर लेखक ने सेवा के लिए धन-संपत्ति का दान करवाया है | इस प्रकार ' कर्मभूमि ' उपन्यास पर गाँधी विचारधारा का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है |

संदर्भ संकेत :

१. ' कर्मभूमि ' - मुंशी प्रेमचंद , कमल प्रकाशन , नई दिल्ली , पृष्ठ - १०
२. वही , पृष्ठ- १६
३. वही , पृष्ठ- ९१
४. वही , पृष्ठ- १०६
५. वही , पृष्ठ- १०४
६. वही , पृष्ठ- १४४
७. वही , पृष्ठ- १४५
८. वही , पृष्ठ- १५३